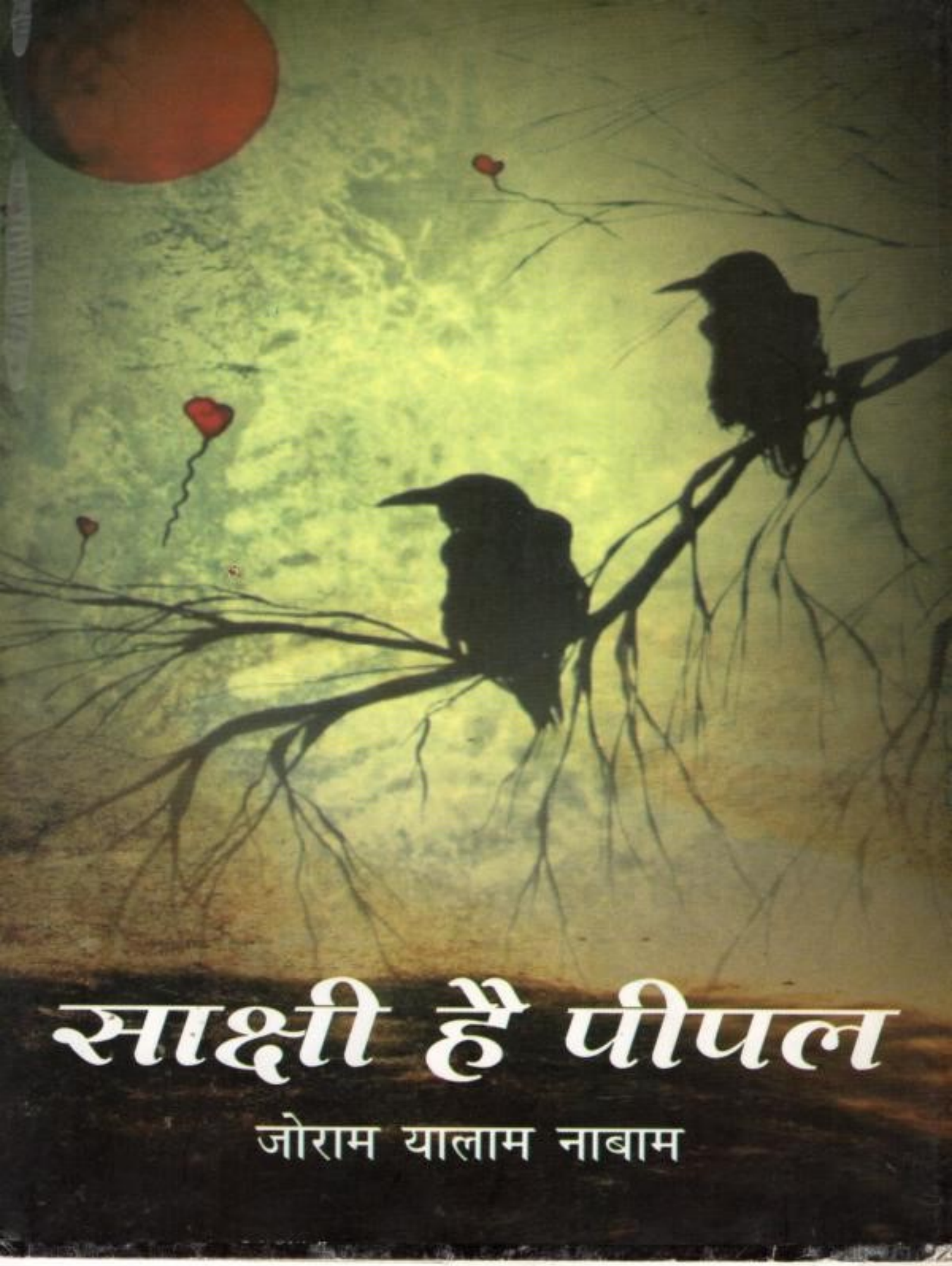
साक्षी है पीपल
जोराम यालाम नाबाम

साक्षी है पीपल

माँ
जिसने सिखाया मुझे
निरक्षर अक्षरों के
हृदय में मौजूद
अनगिनत जीवन-स्पंदन पढ़ना
उन्हें अपने हृदय में महसूस करना
कलम उठाना
और उन्हें
कहानियों में पिरोना
उसी माँ
जोराम रिनी
को समर्पित है यह संग्रह

—यालाम!

भूमिका

पिछले बरस तीन महीने के अरुणाचल प्रवास में मुझे जोराम यालाम नाबाम की हिंदी कहानियाँ पढ़ने का अवसर मिला। इसके पूर्व मैं उन्हें लेखिका के रूप में नहीं, केवल हिंदी साहित्य की कॉलेज प्राध्यापिका के रूप में जानता था। राजीव गांधी विश्वविद्यालय के अतिथि भवन में जब वे मुझसे भेंट करने आईं, तो मैंने व्यक्तिगत और पारिवारिक कुशल क्षेम के परिवृत्त तथा अरुणाचल के लोगों, वहाँ की प्रकृति मौसम आदि तक सिमट आई बातचीत में कुछ नया जोड़ने के उद्देश्य से उनसे पूछ लिया, 'आप अपने कॉलेज में छात्रों को साहित्य पढ़ा कर संतुष्ट हो जाती हैं या कुछ अपना पढ़ना लिखना भी करती है?'

'हाँ सर, और उसकी किताब भी छप चुकी है।'

'वह तो सामान्य आवश्यकता के अंतर्गत भी होगी। एक उपाधि मिल गई होगी।'

'हाँ सर, और उसकी किताब भी छप चुकी है।'

'बहुत अच्छा है। लेकिन उसके बाद भी तो काम करते रहना चाहिए था। अरुणाचल के बारे में ही कुछ लिखतीं।'

'सर, ब्रत दरअसल ये है कि एक तो कॉलेज में और वहाँ आने-जाने में ही काफी समय निकल जाता है। फिर आप जानते हैं, विवेक राजनीति में हैं। घर पर बहुत लोग आते-जाते रहते हैं। उन सबकी आवभगत भी करनी पड़ती है।'

विवेक जी यालाम के पति हैं। बहुत समझदार, सरल-हृदय, सेवाभावी और राजनीति में सक्रिय। अनाथ और निर्धन बालकों को शिक्षित बनाने के लिए अपने घर के निकट ही एक बड़ा आवासीय विद्यालय चला रहे हैं। इस विद्यालय के शिक्षक अधिकांशतः अरुणाचल से बाहर के हैं—सभी शिक्षा प्रसार की चुनौतियाँ स्वीकार करने को उद्यत, परिश्रम से मुँह न चुराने वाले, खुले विचारों वाले और मधुरभाषी। नाबाम विवेक की सूझबूझ से बहुत सारे मिशनरी भाव के मनुष्य एक स्थान पर आ जुटे हैं। इस विद्यालय की साप्ताहिक प्रार्थना सभा में बालक सभी प्रमुख धर्मों की प्रार्थनाओं का आवृत्तिपाठ करते हैं। गांधी जयंती पर मैंने देखा कि एक बालक ने गांधी वेश में अपने अनुयायियों के साथ हाथ में लाठी लिए बहुत दूर से चल कर

मंच तक आया था। यालाम को अपना काफी समय इस विद्यालय की देखभाल में भी लगाना पड़ता है। मुझे यह सब बाद में पता चला। उस दिन तो यही लग रहा था कि अध्यापकी के कुएँ में विश्राम की आदत अपना चुके दूसर लोगों के समान यालाम भी बहाने गढ़ कर बच निकलने की कोशिश कर रही हैं। मैंने बात का सिरा हाथ से निकलने नहीं दिया, बोला, 'यह सब ठीक है, लेकिन जब आप उच्च शिक्षा से जुड़ गई हैं और आपमें कुछ लीक से हट कर करने की प्रतिभा हैं, तो समय निकाल कर अपनी जिम्मेदारी भी निभानी चाहिए।'

'वह तो सर, लेकिन समझ नहीं पाती कि क्या करूँ?'

'कुछ न हो, तो अरुणाचल की या अपनी न्यीशी लोककथाएँ ही एकत्र करके लिख डालिए। धीरे-धीरे तो यहाँ की लोक सम्पदा विलुप्त ही हो रही है। उसे संरक्षित करना होगा। यह अरुणाचल का काम भी है और हिंदी का भी।'

'सर बात तो ठीक है। मुझे कुछ करना चाहिए। अच्छा सर मैंने कुछ लिखा है, पता नहीं वह क्या है, आप पढ़ेंगे?'

'क्यों नहीं! आप लेकर आइए।'

'ठीक है सर, मैं अगले रविवार को आती हूँ।''

मैंने देखा, यालाम की झिझक थोड़ी कम हुई और चेहरे पर चमक दौड़ गई। रविवार को वे अपनी दो रचनाओं के साथ आ पहुँचीं। सामान्य शिष्टाचार निभा कर मैंने उन्हें विदा कर दिया और अवसर पाते ही वे दोनों रचनाएँ पढ़ने बैठ गया। अंत की ओर बढ़ते-बढ़ते मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, वे यालाम की लिखी हिंदी की दो मौलिक कहानियाँ थीं। दोनों में स्त्री चरित्र केंद्र में थे, जो बिना किसी लाग लपेट या दाब-ढाँक के जीवन की त्रासदियों से गुजरते हुए अपने यथार्थ का परिचय दे रहे थे। इन स्त्रियों में कहीं भी दिखावा या बनावटीपना नहीं था। ये थीं समाज में परिवार में, स्कूल में, खेत जंगल में, बारिश में, घाम में—कभी हँसती हुई, कभी किसी निर्णय पर पहुँचने का संकेत करती हुई। इन स्त्रियों के पास कभी-कभी मनकों की एक माला दिखाई देती थी जो इन्हें अपनी माँ से मिली थी, बड़ी मूल्यवान थीं और आड़े वक्त काम आती थी। एक कहानी में एक स्त्री इस ढंग से आत्महत्या का रास्ता चुनती है कि उस स्थिति की कल्पना से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कायरता भरा यह रास्ता चुन कर भी वह स्त्री जीवन से जुड़े काफी सारे तीखे सवाल छोड़ जाती है।

मैंने जल्दी ही मालाम को फोन किया—

'आपकी दोनों रचनाएँ अच्छी लगीं।'

'धन्यवाद सर, लेकिन ये क्या हैं? मैंने तो, जो मन में आया, लिखती चली गई।'

'वह मैं बाद में बताऊँगा। पहले आप बताएँ, अपने ऐसी और रचनाएँ भी की

हैं या सिर्फ ये दो ही हैं?'

'और भी हैं सर।'

'किसी दिन लेकर आइए, पढ़ने की इच्छा है।'

अवकाश के एक दिन यालाम एक सुंदर काले बैग में छः रचनाएँ लिए आई। सबकी सब कहानियाँ। एक-एक को पढ़ता गया। किसी में पापुमपारे नदी क्षेत्र का वातावरण किसी में जोराम गाँव, किसी में जीरो नामक जगह। स्त्री सभी कहानियों के केंद्र में। भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ निभाती हुई, सबसे बड़ी पत्नी के रूप में भारी भटक जिम्मेदारी उठाती हुई, अपनी मर्जी दर्शाते हुए पति की एक के बाद एक शादियाँ करवाती हुई, दोनों वक्त भोजन पकाती हुई खेत-जंगल में हाड़तोड़ काम करती हुई, समूह-उत्सवों में स्थानीय दारू का प्रबंध करती हुई, बार-बार छली जाकर टूटती हुई, सबसे छोटी पत्नी के रूप में अपमान सहते हुए भी जीती हुई कभी-कभी किसी सौत के हम उम्र पुत्र की ओर आकृष्ट होती हुई। यही स्त्री अपने होने का अर्थ खोजती हुई भी मौजूद मिली यालाम की कहानियों में।

इन कहानियों के बच्चे भी विलक्षण थे। अनेक माओं, किंतु एक ही पुरुष की संतान होकर साथ-साथ रहते, सोते, खाते, शिकार करते, खेती में सहायता करते, शैतानी और मनोरंजन करते तथा अपनी जरूरतें खुद पूरी करने को आतुर होते हुए। ये बच्चे सिर्फ पिता से डरते हैं, माँ से कभी नहीं। यह स्थिति तब है, जब वह पिता पुरुष कोई बड़ा काम नहीं करता, बस कभी-कभी गुस्सा होकर दाव उठाए पत्नियों को धमकाने लगता है। बच्चे समझने लगे हैं कि उनका पिता अलग-अलग दिन अलग-अलग माओं के पास जाता है, लेकिन उनके मन में कोई सवाल नहीं उभरता, वे जन्म से ही इसक अभ्यस्त हो चुके हैं। यह उनकी समाज व्यवस्था का अंग बन कर सदियों से इसी तरह चली आ रही है जीवन शैली है। जहाँ शिक्षा पहुँच गई है, शहरीकरण का प्रभाव पड़ गया है, वहाँ इस चलन में बदलाव आया है। बच्चे इस बदलाव को भी जानने की कोशिश कर रहे हैं।

बाह्य संरचना की दृष्टि से मैंने पाया कि ये बतकहीं के काफी करीब है। रचना के ढाँचे के बारे में कोई खास सावधानी दिखाई नहीं देती—ऐसी तो बिल्कुल नहीं, जो किसी लेखक को आशंका से भरे रखती है कि कहीं कोई उसकी कलात्मकता में कोई कमजोरी न खोज लें। यालाम को इसकी चिंता नहीं है। मुझे याद आ रहा है, एक कहानी में जब इंदिरा गांधी अरुणाचल जाकर पंडित नेहरू की प्रतिमा का अनावरण करती हैं, तो समारोह का संचालक हिंदी के उस रूप में लोगों से तालियाँ बजाने का निवेदन करता है, जिसे आजकल अरुणाचली हिंदी कहा जाने लगा है। हिंदी कहानी के लिए यह एकदम नई बात है।

एक रविवार को यालाम बिना पूर्व सूचना के आ गई और पूछा, 'सर, मैं जो सामग्री दे गई थी, उसे पढ़ लिया?'

'हाँ, वे सभी आपकी अच्छी कहानियाँ हैं। आप तो बहुत अच्छा लिखती हैं।'

'सर क्या ये सचमुच कहानियाँ कही जाएँगी? मुझे तो मालूम नहीं।'

(यह सवाल मेरे लिए बहुत कठिन था। मैं समझ चुका था कि यालाम भी पहले से जानती हैं कि उनकी रचनाएँ कहानियाँ हैं। पिछली सारी बैठकियों में या तो वे अपनी कहानियों की गुणवत्ता परखने की कोशिश कर रही थीं या मन-ही-मन मेरी अज्ञानता का आनन्द ले रही थीं। मुझे दूसरी बात का यकीन कुछ ज्यादा ही है। कारण यह है कि कहानी परखने की योग्यता मुझमें किसी भी स्तर पर नहीं है और शायद मैं अपनी अधिक आयु के अहम में यालाम को शिक्षा देने की मूर्खता कर रहा था। जो भी बात सच हो—दूसरी ही सच होगी—मुझे अपनी इस मूर्खता पर भी गर्व है, क्योंकि उसी के सहारे में यालाम जैसी हिंदी की एक नवोदित कहानीकार से परिचित हो सका। दूसरे किसी की भी बारी मेरे बाद ही आएगी।)

मैंन सवाल को टालते हुए कहा, 'यालाम, आप इन कहानियों को पुस्तकाकार छपवा सकें, तो अच्छा रहेगा।'

'ऐसा हो सकता है क्या सर?' कोई कुछ ऐसा वैसा तो नहीं बोलेगा? मैं तो लिखती जाती हूँ और रखती जाती हूँ।'

'आप लिखती जाइए, लेकिन रखती मत जाइए।

अपनी कहानियाँ प्रकाशित कराइए।'

'कोशिश करती हूँ सर।'

आज जब से कहानियाँ पुस्तककार छप रही हैं, तो आनन्द मिल रहा है, हिंदी को एक नवोदित कहानीकार के पा जाने का आनन्द!

यालाम को शुभकामनाएँ।

स्वतंत्रता दिवस, 2012

—देवराज

पूर्व अधिष्ठाता : मानविकी संकाय

मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल

अनुक्रम

साक्षी है पीपल	13
क्या सच में वे कभी मिले थे	27
उसका नाम यापी था	44
यासो	55
कामेश्वर बरुआ हालुवा बन गया	63
मैं यामी हूँ	69
नदी	79
चुनौती	95